# रॉबर्ट वानॉय, व्यवस्थाविवरण, व्याख्यान 1

# साहित्यिक आलोचनात्मक सिद्धांत, जेईडीपी

© 2011, डॉ. रॉबर्ट वानॉय, डॉ. पेरी फिलिप्स, और टेड हिल्डेब्रांट

1. पाठ्यक्रम सर्वेक्षण: 4 विषय

यह पाठ्यक्रम व्यवस्थाविवरण की पुस्तक को चार व्यापक विषयों में कवर करेगा। सबसे पहले, आज हम लेखकत्व और तारीखों की जांच करेंगे जिसमें व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के लिए महत्वपूर्ण दृष्टिकोण का एक संक्षिप्त सर्वेक्षण शामिल होगा। व्यवस्थाविवरण की पुस्तक एक ऐसी पुस्तक है जिसे इसके लेखकत्व और इसकी तिथि के संदर्भ में भारी मात्रा में चर्चा मिली है; संभवतः पेंटाटेच की अन्य पुस्तकों की तुलना में अधिक, शायद पुराने नियम की किसी भी अन्य पुस्तक की तुलना में अधिक। निःसंदेह, पुस्तक के महत्व को समझने के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण मामला है। इसलिए हम लेखकत्व और तिथि पर विचार करेंगे।

व्यवस्थाविवरण पर इस पाठ्यक्रम का दूसरा विषय होगा, "पुस्तक की साहित्यिक संरचना और दायरा।" पुस्तक की साहित्यिक संरचना कुछ महत्वपूर्ण प्रश्नों से संबंधित है, लेकिन मुझे लगता है कि हमें इसे अपने आप में एक विषय के रूप में मानना चाहिए क्योंकि इसकी संरचना और इसका दायरा, मुझे लगता है, इसकी व्याख्या, इसके अर्थ और के बारे में बहुत कुछ कहता है। इसका महत्व; विशेष रूप से जैसा कि आप पिछले साल पुराने नियम के इतिहास से जानते हैं, प्राचीन निकट पूर्वी संधियों और व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में उनकी संरचना के संबंध में। मेरेडिथ क्लाइन के कार्य *ड्यूटेरोनॉमी: द ट्रीटी ऑफ द ग्रेट किंग*, या कानून के अपने लोगों के साथ वाचा होने की अवधारणा के लिए इसका क्या निहितार्थ है और उस वाचा की सटीक प्रकृति क्या थी? पुस्तक की प्रकृति को समझने के लिए साहित्यिक संरचना का क्या निहितार्थ है?

तीसरा विषय है, "व्याख्यात्मक अध्ययन चयनित अनुच्छेदों में मदद करता है।" मैं अभी इसे शुरू करना चाहता हूं और बाद में वापस आना चाहता हूं। वास्तव में, मैं पाठ्यक्रम का एक बड़ा हिस्सा व्याख्यात्मक चर्चाओं पर खर्च करना चाहूंगा, और मुझे यकीन है कि हम ऐसा करेंगे।

चौथा विषय है, "भविष्यवाणी लेखन और तथाकथित 'ड्यूटेरोनॉमिस्टिक इतिहास' पर व्यवस्थाविवरण का प्रभाव।" मुझे लगता है कि हमें कम से कम कुछ हद तक इस पर गौर करना

चाहिए। पुराने नियम के बाद के भागों पर व्यवस्थाविवरण की पुस्तक का क्या प्रभाव है? व्यवस्थाविवरण की पुस्तक ने भविष्यसूचक उपदेश को किस प्रकार प्रभावित किया है? इसने उन ऐतिहासिक पुस्तकों को किस प्रकार प्रभावित किया है जिन्हें अक्सर "ड्यूटेरोनॉमिस्टिक इतिहास लेखन" का लेबल दिया जाता है? फिर से हम इसके साथ महत्वपूर्ण प्रश्नों पर वापस आ गए हैं, लेकिन मुझे लगता है कि पुराने नियम की ऐतिहासिक पुस्तकों की प्रकृति को समझने के लिए इसमें कुछ महत्व भी है।

तो वे चार विषय: लेखकत्व और तिथियाँ, साहित्यिक संरचना, व्याख्यात्मक अध्ययन, और बाद के पुराने नियम के साहित्य पर प्रभाव। ये वो चीज़ें हैं जिन्हें हम सेमेस्टर के दौरान देखना चाहते हैं।

2. साहित्यिक आलोचना

ए. जेईडीपी सर्वेक्षण

सबसे पहले, पुराने नियम की साहित्यिक आलोचना के संबंध में मामलों की स्थिति पर कुछ सामान्य टिप्पणियाँ। मुझे लगता है कि यह निश्चित रूप से एक वैध सामान्यीकरण है कि लगभग एक सदी पहले जूलियस वेलहाउज़ेन द्वारा अपने क्लासिक रूप में तैयार की गई जेईडीपी परिकल्पना पर एक सदी की बहस के बाद, उनकी मूल स्थिति व्यापक रूप से स्वीकृत है और पेंटाटेच की उत्पत्ति और प्रकृति के लिए बहुत प्रभावशाली है। . सिद्धांत के विभिन्न विवरणों में कुछ आम तौर पर स्वीकृत संशोधनों और समायोजनों के बावजूद; जहां तक प्रमुख विद्वान संगठनों और प्रकाशनों और समाजों का सवाल है, पुराने नियम की विद्वता की दुनिया में मूल सिद्धांत अभी भी काफी हद तक बरकरार है।

वर्तमान दृष्टिकोण के विशिष्ट उदाहरण गेराल्ड ए. लारू ने अपनी पुस्तक *ओल्ड टेस्टामेंट लाइफ एंड लिटरेचर* (1968) में व्यक्त किए हैं, जहां वे कहते हैं, "अधिकांश वर्तमान विद्वता दस्तावेजी परिकल्पना के मूल आधार को स्वीकार करती है, अर्थात् विभिन्न स्रोत सामग्री पाया जाए, कि लेबल जे, ई, डी और पी प्रमुख स्रोतों के लिए स्वीकार्य हैं और विकास का क्रम वही है जो ग्राफ़-वेलहाउज़ेन थीसिस में प्रस्तावित है। अब यह 1968 है; यह बहुत पुरानी बात नहीं है, और लार्यू की

राय में वेलहाउज़ेन के उन बुनियादी परिसरों को आज भी स्वीकार किया जाता है।

यहाँ पेंटाटेच के विभिन्न स्रोत हैं। उन स्रोतों को अक्सर जे [यहोवा स्रोत, सीए] लेबल किया जाता है। 850 ईसा पूर्व], ई [एलोहिम स्रोत लगभग। 750 ईसा पूर्व], डी [व्यवस्थाविवरण स्रोत, 621 ईसा पूर्व] और पी [पुरोहित स्रोत, निर्वासन या निर्वासन के बाद सीए। 550-450 ईसा पूर्व]। यह उन स्रोतों का क्रम है, जहां तक उनकी रचना का समय है: जे प्रारंभिक है, ई बाद में है, डी थोड़ा बाद में है, पी अंतिम है, यह वह क्रम है जिसे अभी भी सही माना जाना है और जिसे प्रस्तावित किया गया था ग्राफ़ और वेलहाउज़ेन द्वारा।

लार्यू आगे कहते हैं कि इस सिद्धांत की स्वीकृति पेंटाट्यूचल साहित्य के उनके सिद्धांत की मूल धारणा है। जब वह पेंटाटेच में आता है, तो वह उस धारणा पर शुरू होता है, कि जेईडीपी ढांचा, या संरचना जिसे वेलहाउज़ेन ने स्थापित किया है, वह तरीका है जिससे आप साहित्य तक पहुंचते हैं। मुझे लगता है कि आपको यह कहना चाहिए कि अगर कोई ऐसा करने जा रहा है तो यह एक सराहनीय स्वीकारोक्ति है क्योंकि अक्सर इस बात की कोई मान्यता नहीं होती है कि वे उस धारणा पर शुरू कर रहे हैं और जेईडीपी केवल एक सिद्धांत है। आज आप कई हैंडबुक उठाते हैं, और इसे किसी सिद्धांत या धारणा के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जाता है; इसे एक स्थापित तथ्य के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, और आप उस स्थापित तथ्य के आधार पर शुरुआत करते हैं। लारू कहते हैं, "चूंकि दस्तावेजी परिकल्पना पेंटाट्यूचल विश्लेषण के सभी सिद्धांतों में सबसे व्यापक रूप से स्वीकृत है, इसलिए यह पुस्तक शोध की इस पद्धति द्वारा प्राप्त निष्कर्षों का उपयोग और चित्रण करेगी।" फिर वह पाठक को याद दिलाता है कि यह दस्तावेजी परिकल्पना एक परिकल्पना से अधिक कुछ नहीं है, कुछ तथ्यों को समझाने के लिए मान लिया गया एक प्रस्ताव है। यह एक सिद्धांत है. इसका उपयोग पुराने नियम में कुछ कथित समस्याओं को समझाने के लिए किया जाता है। तो पहले आप उस दृष्टिकोण के निष्कर्षों को अपनाएं, और फिर आप उस स्वीकृत सिद्धांत के आधार पर पुराने नियम के साहित्य का विश्लेषण करें।

अब, अक्सर यह कहा जाता है कि वेलहाउज़ेन पुराना हो गया है, इस समय से ओल्ड टेस्टामेंट छात्रवृत्ति में बहुत सारे बदलाव हुए हैं। फिर भी पुराने नियम को स्वीकार करने की दिशा में एक कदम पीछे चला गया है जैसा कि यह दावा करता है: प्राचीन इज़राइल के इतिहास के संदर्भ में

साहित्य का एक विश्वसनीय टुकड़ा, इत्यादि। इसमें कुछ तो बात है. निश्चित रूप से वेलहाउज़ेन सिद्धांत के मौलिक किनारों को हटा दिया गया है, लेकिन मूल रूप से संरचना बरकरार है। अब, मैं इस सब के साथ कुछ करने के लिए आगे बढ़ रहा हूं और वह महत्वपूर्ण भूमिका है जो ड्यूटेरोनॉमी इस पूरे जेईडीपी तर्क में निभाती है। यह आधारशिला है, लेकिन मुझे लगता है कि उस तक पहुंचने से पहले हमें कुछ पृष्ठभूमि की आवश्यकता है।

बीआरजे थॉम्पसन (वीटी सुपर 19) आरजे थॉम्पसन, यह जेए थॉम्पसन से भिन्न थॉम्पसन है, आरजे थॉम्पसन ने *ग्रेफ के बाद से आलोचना की एक सदी में मूसा और कानून नामक पुस्तक लिखी।* ग्राफ वेल्ह ऑसेन के पूर्ववर्ती थे । वेलहाउज़ेन ने ग्राफ़ के काम पर निर्माण किया। थॉम्पसन ने 1970 में यह पुस्तक *मोसेस एंड द लॉ इन ए सेंचुरी ऑफ क्रिटिसिज्म ग्राफ लिखी थी।* यह *वेटस टेस्टामेंटम का पूरक है*। *वेटस टेस्टामेंटम,* आपके लिए जो इससे परिचित नहीं हैं, संभवतः पुराने टेस्टामेंट अध्ययनों में दो उत्कृष्ट तकनीकी पत्रिकाओं में से एक है। *वेटस टेस्टामेंटम* एक है, दूसरा, जिसे अक्सर 'ZAW' के रूप में जाना जाता है, *ज़िट्सक्रिफ्ट फर अल्टेस्टामेंटलिचे विसेनशाफ्ट,* जो पुराने नियम के अकादमिक अध्ययन के लिए एक पत्रिका है। ये दोनों लाइब्रेरी में हैं. लेकिन *वीटी* [ *वेटस टेस्टामेंटम* ], एक त्रैमासिक पत्रिका है। आप कभी इस पर गौर कर सकते हैं. वे पूरक प्रकाशित करते हैं। यह अनुपूरक संख्या 19 है; यह एक पूर्ण लंबाई वाली किताब है. पूरक श्रृंखला में विभिन्न पुराने नियम के विद्वानों की रुचि के विभिन्न विषयों पर तकनीकी मोनोग्राफ शामिल हैं। यह मूसा और कानून पर था, और वेलहाउज़ेन के समय से लेकर 1970 में लिखे जाने तक आलोचनाओं का इतिहास है। पृष्ठ 163 पर वह यह कहते हैं: "1965 में, इसके प्रकाशन के एक शताब्दी बाद, ग्राफ़ियन परिकल्पना अभी भी अधिकांश विद्वानों द्वारा इसका समर्थन किया जाता है। 1905 में ऑर, 1910 में स्टेस, 1918 में नोयबाउर, 1923 में डीबोइस, 1938 में ऑर्बॉक, 1947 में लेवी, 1950 में गिन्सबर्ग द्वारा इसके निधन की भविष्यवाणियाँ पूरी नहीं हुई हैं। इसके बजाय, इसने अपने आलोचकों पर पानी फेर दिया है और यरूशलेम और रोम में रूढ़िवादी गढ़ों को नष्ट कर दिया है और इवेंजेलिकल प्रोटेस्टेंट में पैठ बना ली है।

अब यह थॉम्पसन का निष्कर्ष है जहां तक ओल्ड टेस्टामेंट पेंटाटेच के लिए ग्राफ-

वेलहाउज़ेन दृष्टिकोण के निरंतर प्रभाव और स्वीकृति का संबंध है, वेलहाउज़ेन द्वारा पहली बार इसकी वकालत किए जाने के एक शताब्दी बाद। इसलिए हम ऐसी किसी चीज़ से निपट नहीं रहे हैं जिसका कोई समसामयिक महत्व या रुचि नहीं है। यह पुराना नहीं है जब हम कहते हैं कि वेलहाउज़ेन सिद्धांत अभी भी कुछ ऐसे हैं जिनसे निपटना होगा।

सी. आधुनिक प्रभाव हाल के वर्षों में बाइबल सिखाने में सामान्य जन की सहायता के लिए कई टिप्पणियाँ लिखी गई हैं। टिप्पणीकारों ने पुराने नियम की व्याख्या के आधार के रूप में वेलहाउज़ेन सिद्धांत को अपनाया है। आपको बस लाइब्रेरी में जाना है और रिचमंड, वर्जीनिया में स्थित जॉन नॉक्स प्रेस से *लेमैन की बाइबिल कमेंट्री जैसी कोई चीज़ उठानी* है और आप देखेंगे कि उन्होंने शुरुआती बिंदु के रूप में वेलहाउज़ेन सिद्धांत की स्वीकृति को अपनाया है। *टॉर्च बाइबिल कमेंट्री*, लंदन में एससीएम कमेंटरी, फिलाडेल्फिया में *वेस्टमिंस्टर* प्रेस, या नैशविले में एबिंगडन प्रेस से *बाइबिल गाइड*, *ये सभी लोकप्रिय कमेंट्री हैं जो लोगों को संडे स्कूल की कक्षा में पढ़ाने में मदद करने के लिए डिज़ाइन की गई हैं, लेकिन वे* प्रारंभिक बिंदु के रूप में वेलहाउज़ेन स्थिति को अपनाएं।

वेलहाउज़ेन स्थिति का पालन देश भर के कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में दिए जाने वाले धर्म और धार्मिक साहित्य के पाठ्यक्रमों में उपयोग की जाने वाली पाठ्यपुस्तकों में भी पाया जाता है। संभवत: आपमें से कुछ लोगों ने यह देखा होगा, हो सकता है कि आपने बाइबिल के धार्मिक साहित्य का पाठ्यक्रम भी लिया हो और पाठ्यपुस्तक ने वेलहाउज़ेन सिद्धांत को अपनाया हो। उदाहरण के लिए, *पुराने नियम को समझना* बीडब्ल्यू एंडरसन उन प्रारंभिक विश्वविद्यालय पाठ्यक्रमों में उपयोग किया जाने वाला एक बहुत ही सामान्य पाठ है। नॉर्मन गॉटवाल्ड की ' *ए लाइट टू द नेशंस' एक और किताब है*। मैं दूसरों का उल्लेख कर सकता हूं, लेकिन मुद्दा यह है कि कई विश्वविद्यालय परिसरों में वेलहाउज़ेन सिद्धांत आज भी मौजूद है, व्याख्यान और पाठ्यपुस्तक दोनों में, पुराने नियम के साहित्य तक पहुंचने का एकमात्र तरीका है।

डी. चुनौतियों को पहचानने में विफलता मुझे लगता है कि इन अध्ययन गाइडों और

पाठ्यपुस्तकों के बारे में भ्रामक बात यह है कि इस सिद्धांत को तथ्य के रूप में और कुछ ऐसे स्थापित और अकाट्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यदि किसी को पिछली शताब्दी के पुराने नियम के विद्वता के विशाल साहित्य का ज्ञान नहीं है और वह इस पर हुई सभी बहसों से अवगत नहीं है, तो वह व्यक्ति वास्तव में प्रस्तुत किए गए कई तर्कों का अच्छी तरह से सामना करने में असमर्थ है। वे शायद इस बात से अनभिज्ञ हैं कि सिद्धांत के कई सिद्धांतों को चुनौती दी गई है और उन पर विवाद किया गया है, यहां तक कि स्वयं आलोचनात्मक विद्वानों के बीच भी। इन आलोचनात्मक विद्वानों के बीच अपनी स्थिति के विभिन्न पहलुओं पर एक-दूसरे पर हमला करने के बीच गोलीबारी हुई है। इसलिए सर्वसम्मति एक ऐसी चीज़ है जो सर्वेक्षण पुस्तकों में पाई जाती है लेकिन तकनीकी साहित्य में शायद ही कभी पाई जाती है। जब आप तकनीकी साहित्य में जाते हैं, तो आप इन सिद्धांतों के सभी प्रकार के विवरणों पर आगे-पीछे तर्क-वितर्क की एक अविश्वसनीय उलझन में फंस जाते हैं।

जेईडी और पी के आसपास की इस पूरी चर्चा में, ड्यूटेरोनॉमी का केंद्रीय महत्व है। दिलचस्प बात यह है कि पिछले कुछ वर्षों में, व्यवस्थाविवरण के अध्ययन में कुछ रोमांचक विकास हुए हैं जो सीधे तौर पर इस पूरी समस्या से संबंधित हैं, और विशेष रूप से पेंटाटेच के मोज़ेक लेखकत्व के प्रश्न के माध्यम से। इसलिए हमारा उद्देश्य लेखकत्व और तिथियों की इस चर्चा में कुछ अंतर्दृष्टि प्राप्त करना होगा कि ड्यूटेरोनॉमी की डेटिंग पूरे जेईडीपी सिद्धांत के लिए इतनी महत्वपूर्ण क्यों है, और लेखकत्व और के संबंध में हाल के कुछ विकासों के बारे में कुछ सीखना होगा। व्यवस्थाविवरण की तारीख जो वास्तव में वेलहाउज़ेन स्थिति के विरुद्ध उपयोग किए जाने वाले कुछ नए हथियार प्रदान करती है।

ई. वेलहाउज़ेन स्कूल का व्यवस्थाविवरण के प्रति दृष्टिकोण: योशिय्याह के सुधारों के समय में लिखी गई व्यवस्थाविवरण लगभग। 621 ई.पू

अब, आइए सबसे पहले वेलहाउज़ेन स्कूल के परिप्रेक्ष्य से ड्यूटेरोनॉमी के लेखकत्व और कालनिर्धारण को देखें। यह क्या है? बस एक संक्षिप्त टिप्पणी के माध्यम से, जहां तक पृष्ठभूमि की बात है, व्यवस्थाविवरण की पुस्तक, अपने स्वयं के साक्ष्य के अनुसार, मोज़ेक मूल की है। यदि आप

पुस्तक पर गौर करें, तो यह स्पष्ट रूप से खुद को मूसा द्वारा वादा किए गए देश में प्रवेश करने से पहले मोआब के मैदानों पर इज़राइल के लोगों को लिखी गई सामग्री के रूप में प्रस्तुत करता है। 19वीं सदी की शुरुआत तक यहूदियों और ईसाइयों दोनों ने इसे मोज़ेक माना है। इसलिए, ऐतिहासिक रूप से, ड्यूटेरोनॉमी के विकास की मोज़ेक उत्पत्ति पर सवाल उठाया जाना एक हालिया विकास है।

1805 और 1806 में विल्हेम डी वेट नाम के एक व्यक्ति ने यह दृष्टिकोण आगे बढ़ाया, जो कि आलोचनात्मक विद्वानों के दृष्टिकोण पर हावी हो गया, कि जोशिया के समय में, 2 किंग्स 22 के अनुसार, मंदिर में जो कानून की किताब पाई गई थी, वह है अधिकांश भाग को व्यवस्थाविवरण के साथ पहचाना जाना चाहिए। अब, यह अपने आप में कोई बहुत नई बात नहीं है। परन्तु व्यवस्था की पुस्तक की पहचान व्यवस्थाविवरण से की गई। और यहाँ महत्वपूर्ण बात यह है कि यह पुस्तक उस समय से कुछ ही समय पहले उत्पन्न हुई थी। दूसरे शब्दों में, यह योशिय्याह के समय से ठीक पहले लगभग 621 ईसा पूर्व लिखा गया था जैसा कि 2 किंग्स 22 में वर्णित है। डेवेट ने वेलहाउज़ेन से पहले लिखा था और यह दृष्टिकोण अपनाया था कि ड्यूटेरोनॉमी कानून की किताब थी जो योशिय्याह के समय से कुछ समय पहले उत्पन्न हुई थी। दूसरे शब्दों में, इसका मोज़ेक प्रतिनिधित्व एक "पवित्र धोखाधड़ी" है।

योशिय्याह के समय से कुछ समय पहले पुस्तक की उत्पत्ति के बारे में वह राय पूरे जेईडीपी सिद्धांत की आधारशिला बन गई। अब, हम यह जानना चाहते हैं कि कुछ हद तक ऐसा क्यों है । हम इनमें से कुछ प्रश्नों पर विस्तार से चर्चा नहीं कर सकते, लेकिन हम तर्क-वितर्क की दिशा का कुछ अंदाज़ा प्राप्त कर सकते हैं। जेईडीपी अनुक्रम का एक पहलू, वेलहाउज़ेन सिद्धांत के पीछे की शक्ति यह थी कि वह तर्क की पंक्तियों को एक साथ लाया जो एक दूसरे को अभिसरण और समर्थन करते प्रतीत होते हैं। जेईडीपी स्रोत दस्तावेजों के अनुक्रम के संबंध में उनके तर्क का एक पहलू उन दस्तावेजों के भीतर कानूनी सामग्री की तुलना थी। दूसरे शब्दों में, आप जे स्रोत, ई स्रोत, डी स्रोत और पी स्रोत में कानूनी सामग्री की तुलना करते हैं। दावा यह किया गया था कि यदि आप इन स्रोतों के भीतर कानूनी सामग्री की तुलना करते हैं, तो आप एक विकास देख सकते हैं। जहां तक समय का सवाल है, विकास के उस पूरे क्रम में एक बिंदु जो तय है, वह व्यवस्थाविवरण की पुस्तक की

तारीख है, जो 621 ईसा पूर्व की है, इसलिए उससे पहले रखी गई कानूनी सामग्री, निश्चित रूप से, 621 से पहले की आवश्यकता होगी। तदनुसार, जो सिद्धांत के अनुसार व्यवस्थाविवरण के बाद के विकास को दर्शाता है, उसे 621 ईसा पूर्व के बाद आना होगा। लेकिन संदर्भ का बिंदु 2 राजा 22 बन जाता है और कानून की किताब के साथ व्यवस्थाविवरण की पहचान होती है जो लगभग 621 ईसा पूर्व

एफ में राजा योशिय्याह के शासनकाल में उत्पन्न हुई थी। व्यवस्थाविवरण और वाचा संहिता

अब, इस दृष्टिकोण में, व्यवस्थाविवरण का मुख्य कानूनी खंड अध्याय 12 से 26 है। कानूनी सामग्री वास्तव में अध्याय 12 से शुरू होती है। इसे आम तौर पर "व्यवस्थाविवरण संहिता" के रूप में जाना जाता है। वे "ड्यूटेरोनोमिक कोड" की बात करते हैं जो पेंटाटेच में पाए जाने वाले कानून के अन्य कोडों से अलग है। आपके पास व्यवस्थाविवरण संहिता 12-26 है। वेलहाउज़ेन को लगा कि कोड की उत्पत्ति राजा योशिय्याह के समय लगभग 621 ईसा पूर्व या उससे कुछ समय पहले हुई थी। उन्होंने उस कानूनी सामग्री की तुलना पुराने नियम की कानूनी सामग्री के अन्य समूहों से की, और निष्कर्ष निकाला कि कानूनों के ये अन्य समूह समय के अन्य बिंदुओं से संबंधित थे और समय की ये अवधि काफी हद तक अलग-अलग थीं।

कानूनी सामग्रियों के इन अन्य समूहों में से सबसे पहले "वाचा की पुस्तक" या जिसे अक्सर "वाचा संहिता" कहा जाता है, निर्गमन अध्याय 20-23 में पाए गए थे। वह वाचा संहिता, निर्गमन 20-23, या तो जे या जेई को सौंपी गई है। अब आलोचकों को अक्सर जे और ई के बीच अंतर करने में कठिनाई होती है। इस बात पर बहुत विवाद है कि क्या अनुबंध संहिता जे का उत्पाद है या जे और ई के संयोजन का उत्पाद है, लेकिन किसी भी मामले में, जे या जेई। निर्गमन 20 और 23 की वाचा संहिता में कहा गया है कि पूजा का कोई केंद्रीकरण नहीं है। पूजा का केंद्रीकरण, जैसा कि हम नोटिस करने जा रहे हैं, इस पूरी चर्चा में एक बहुत ही महत्वपूर्ण मुद्दा बन गया है। निर्गमन 20 श्लोक 24 पर ध्यान दें। " मेरे लिए मिट्टी की एक वेदी बनाओ [जो इस अनुबंध संहिता के भीतर है] और उस पर अपने होमबलि और मेलबलि, अपनी भेड़-बकरियों और अपने मवेशियों को बलिदान करो। [अब कहां?] जहां भी मैं अपने नाम का सम्मान करूंगा, मैं तुम्हारे पास आऊंगा और तुम्हें

आशीर्वाद दूंगा। यदि तुम मेरे लिये पत्थरों की वेदी बनाओ, तो उसे गढ़े हुए पत्थरों से न बनाना, क्योंकि यदि तुम उस पर कोई औज़ार चलाओगे, तो तुम उसे अशुद्ध करोगे। और मेरी वेदी के पास सीढ़ियों से न चढ़ना, ऐसा न हो कि तेरा तन उस पर प्रगट हो जाए।" लेकिन वेदियां इन शर्तों के अनुसार बनाई जानी हैं, और उन्हें बनाया जा सकता है क्योंकि यह उन सभी स्थानों पर इंगित करता है जहां "मैं अपना नाम दर्ज करता हूं।" यह केंद्रीकृत पूजा जैसा नहीं लगता.

ड्यूटेरोनॉमी के संदर्भ में आलोचनात्मक विचारधारा की मानक टिप्पणियों में से एक आईसीसी श्रृंखला (इंटरनेशनल क्रिटिकल कमेंट्री) में एसआर ड्राइवर की टिप्पणी है। यह वेलहाउज़ेन दृष्टिकोण से ड्यूटेरोनॉमी पर एक मानक पाठ्यपुस्तक की तरह है। वह पृष्ठ 136 पर कहते हैं - यह व्यवस्थाविवरण पर एक टिप्पणी है, लेकिन निर्गमन 20 से 24 के बारे में बात करते हुए, जिस श्लोक को हमने अभी वाचा संहिता से देखा है - "निर्गमन 20:24 और निम्नलिखित बलिदान को केवल एक तक ही सीमित रखने पर कोई जोर नहीं देता है स्थान, लेकिन इसे साधारण मिट्टी या बिना तराशे गए पत्थर से बनी वेदी पर चढ़ाने और इसे किसी भी स्थान पर संलग्न करने का निर्देश देता है, 'जिस स्थान पर मैं अपना नाम रखूंगा। मैं तुम्हारे पास आऊंगा और तुम्हें आशीर्वाद दूंगा।' कानून का मतलब काफी सामान्य है; इसका इरादा भूमि के किसी भी हिस्से में निर्मित वेदियों के निर्माण को अधिकृत करना है। तो विचार यह है कि निर्गमन वेदियां कहीं भी बनाई जा सकती हैं; उस पर कोई प्रतिबंध नहीं है. जबकि जैसा कि हम बाद में व्यवस्थाविवरण में देखेंगे, दावा यह है कि इसमें एक प्रतिबंध के साथ केंद्रीकरण शामिल है।

जी. होलीनेस कोड और पी तो, जेईडीपी प्रगति के हमारे बिंदु पर वापस आने के लिए, आपके पास ड्यूटेरोनोमिक कोड है, जो 621 पर दिनांकित है, और जे जो पहले है, वाचा की पुस्तक में दर्शाया गया है। लैव्यव्यवस्था 17 से 24 को "पवित्रता संहिता" के रूप में संदर्भित करना भी सामान्य है। पवित्रता संहिता को कभी-कभी "एच" अक्षर के रूप में जाना जाता है। अब, लैव्यव्यवस्था 17 से 24 में उस कानूनी सामग्री के साथ आपकी आज की तारीख के बारे में कई अलग-अलग राय हैं , चाहे वह व्यवस्थाविवरण से पहले या बाद में हो। लेकिन यह व्यवस्थाविवरण से पहले या बाद में बहुत लंबा नहीं है। तो आपको वाचा संहिता मिलती है, आपको व्यवस्थाविवरण मिलता है, फिर

आपको पवित्रता संहिता मिलती है जो व्यवस्थाविवरण से अलग है लेकिन उसी सामान्य समय के आसपास विकसित हुई है।

वास्तव में, पुरोहिती संहिता है: "पी।" पुरोहित संहिता निर्वासन (550-450 ईसा पूर्व) के दौरान या उसके बाद की है। तो यह योशिय्याह के समय के बाद एक अच्छा सौ साल या उससे अधिक होगा जो 621 ईसा पूर्व में रहता था जिसमें निर्गमन 25 से 31, निर्गमन 35 से 40, लैव्यव्यवस्था 1 से 11, और संख्या 25 से 36, और कुछ अन्य छोटे खंड शामिल हैं। दूसरे शब्दों में, ऐसा लगता है कि इस पुरोहित संहिता में "पी" दस्तावेज़ की कानूनी सामग्री शामिल है, जो निर्वासन के समय या उसके बाद से आती है और पेंटाटेच के माध्यम से इन बिखरे हुए खंडों में पाई जाती है।

इन कोडों की सापेक्ष डेटिंग वेलहाउज़ेन के सिद्धांत की एक अनिवार्य विशेषता थी। वेलहाउज़ेन का सिद्धांत इज़राइल में धर्म के विकास के इसी विचार पर आधारित था। इन कोडों की सापेक्ष डेटिंग तर्क-वितर्क की उन पंक्तियों में से एक थी जिसका उपयोग किया गया था, और वास्तव में, इन चीज़ों को एक क्रम में रखकर धर्म के इस विकास को प्रदर्शित करने के लिए तर्क-वितर्क की प्रमुख पंक्तियों में से एक थी। ड्राइवर, जिसकी ड्यूटेरोनॉमी पर आईसीसी टिप्पणी का मैंने कुछ मिनट पहले उल्लेख किया था, उसके परिचय के रोमन अंक XIV, पृष्ठ 14 पर, इसे इस तरह से रखता है: “ड्यूटेरोनॉमी जेई के तीन कोडों से संबंधित अलग-अलग संबंध है, जैसा कि वाचा संहिता में है। ; एच, जैसा कि पवित्रता संहिता में है; और पी को आम तौर पर इस प्रकार वर्णित किया जा सकता है। यह जेई के नियमों का विस्तार है।” और यहां आपको जेई के विस्तार के रूप में पी मिला है। पी जेई का अनुसरण करता है और इसका विस्तार करता है। D, जेई का विस्तार है। डी कई विशेषताओं में पवित्रता के नियम के समानांतर है, मूलतः पवित्रता के नियम के समानांतर, इसमें अन्य समानताओं के साथ एक गति शामिल है। कानूनों का एक आंदोलन, वास्तव में हमेशा समान नहीं होता है, लेकिन पी में संहिताबद्ध औपचारिक अनुष्ठानों और संस्थानों के समान होता है; इसमें "पी" का संकेत है। यह पी में कई बार कुछ चीजों की आशा करता है।” उनका कहना है कि, "एक ओर जेई पर ड्यूटेरोनॉमी की निर्भरता और दूसरी ओर पी से इसकी स्वतंत्रता ने इस प्रकार स्थापित किया है कि पुस्तकों की विधायी गुणवत्ता को ऐतिहासिक खंडों के माध्यम से बिल्कुल वही मामला दिया गया है।" वह उदार सामग्री के अच्छे बिंदुओं की सराहना करने के लिए एक लेखकीय

तर्क लाता है।

हिब्रू कानून पर एचजेएन कॉलो स्मिथ पुस्तक; पवित्रता संहिता एवं पी

उन्होंने एक अन्य पुस्तक का उल्लेख किया लेकिन वेलहाउज़ेन परंपरा पर निर्भरता है। जेएन कॉलो स्मिथ से *हिब्रू कानून में उत्पत्ति और इतिहास* । अब, मैंने आपको उस चीज़ पर स्मिथ की टिप्पणियों की यह सामान्य योजना दे दी है। पृष्ठ 39 पर उनका एक अध्याय है जिसका शीर्षक है "द ड्यूटेरोनोमिक कोड।" वह कहते हैं, "हिब्रू कानून के विकास का अगला चरण ड्यूटेरोनोमिक कोड, ड्यूटेरोनोमिक अध्याय 1, छंद 1 और 6 द्वारा दर्शाया गया है। अब, अगले चरण से हमारा क्या मतलब है?" खैर, पृष्ठ 43 पर वह विस्तार से बताते हैं, "यह [अर्थात, ड्यूटेरोनोमिक कोड] पहले से मौजूद कोड का एक संशोधन और विस्तार है।' वह कोड वाचा संहिता थी! निर्गमन 20 से 23 में शामिल कुछ विशिष्ट प्रकार के कानूनी मामलों में आपके पास कुछ समानताएं हैं, और आप इन कानूनों को बाद में व्यवस्थाविवरण में संदर्भित पाएंगे। एक ही विषय पर चर्चा करते समय दोनों संहिताएं समय की प्रगति के साथ आए अंतरों को दिखाएंगी। ड्यूटेरोनोमिक कोड को बड़े पैमाने पर लोगों द्वारा स्वीकार किए जाने से पहले वाचा संहिता को अपनाने से कम से कम 200 साल बीत गए! जब भी आप एक ही कानूनी सामग्री की अभिव्यक्ति में एक्सोडस और ड्यूटेरोनॉमी के बीच अंतर देखते हैं, तो आप मान रहे हैं कि कई शताब्दियां एक कोड के निर्माण को दूसरे कोड के प्रकाश में विभाजित करती हैं। और वह उस ढाँचे को दूसरे कोड के साथ आगे ले जाता है। बाद में उसी अध्याय में उन्होंने पूजा के केंद्रीकरण पर चर्चा की।

जहाँ तक व्यवस्थाविवरण की बात है तो वे कहते हैं, “नए कानूनों में सबसे महत्वपूर्ण व्यवस्थाविवरण है। इसे प्रथम स्थान दिया गया है, और कोड [और वह अध्याय 12 में होगा] वह कानून है जिसके अनुसार सभी सार्वजनिक पूजा और संगति यरूशलेम के मंदिर के केंद्रीय मंदिर में की जानी चाहिए।" पूजा का केंद्रीकरण प्रमुख मुद्दा बन जाता है। यह नई चीज़ है जिसे व्यवस्थाविवरण जोड़ता है। वह पृष्ठ 55 में कहते हैं, "यरूशलेम में पूजा का केंद्रीकरण इब्रानियों के जीवन में सबसे महत्वपूर्ण कदम था।" ड्यूटेरोनोमिक कोड पर उनका निष्कर्ष। “ड्यूटेरोनोमिक कोड अनुबंध सिद्धांत का विस्तार और संशोधन है। यह कुछ हद तक देश में इज़राइल की प्रगति

और सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक जीवन पर रिपोर्ट करता है, जिसमें धर्म तीन चीजों पर केंद्रित है। और फिर वह निर्वासन के समय पवित्रता संहिता पर चर्चा करता है। तथ्य यह है कि यह कोड अन्य कोड, विशेष रूप से वाचा कोड और पी कोड को बार-बार दोहराता नहीं है , इसके स्वतंत्र चरित्र का संकेत है। मैं पवित्रता संहिता के बारे में बात कर रहा हूं।

प्रीस्टली कोड दो दस्तावेज़ों का बड़ा हिस्सा है। अन्य दस्तावेज़ों की तरह, कोड समग्र है। ऐसा लगता है कि यह पिछले कई नैतिक संहिताओं पर आधारित है। पुरोहित संहिता एज्रा के नाम से जुड़ी है। यह एज्रा अध्याय 7 से 10 में दर्ज है। एज्रा ने बेबीलोन से याजकों और लेवियों के एक समूह को इकट्ठा किया और उनके साथ यहूदियों और भूमि में रहने वाले एलियंस के बीच सभी विवाहों के सुधार की स्थापना करने के लिए यरूशलेम आए। तो एज्रा के समय के साथ पी कोड के बीच एक संबंध है। तो आपको वह सामान्य प्रगति मिलती है। अब जब आप इस पूरे मामले पर विचार करते हुए बहुत अधिक जटिल प्रश्नों और विस्तृत मामलों में उलझ गए हैं, लेकिन आपको सिद्धांत के सामान्य प्रगतिशील तत्व को समझने की आवश्यकता है।

I. मैनली का विरोध: पूजा का केंद्रीकरण अब, यह एक प्रभावशाली सिद्धांत की तरह लग सकता है, खासकर जब आप इस साहित्य में विकसित किए गए सभी विस्तृत तर्क पढ़ते हैं। लेकिन मुझे लगता है कि यदि आप मैनली, *द बुक ऑफ द लॉ* जैसी किताब पढ़ते हैं , तो वह आपको जो लिखा गया है उस पर विस्तृत तुलना देगा और इनमें से कई तर्कों को विस्तृत आधार पर तौलेगा। क्या आप वास्तव में यह तर्क दे सकते हैं कि क्या ये कानून वेलहाउज़ेन द्वारा निकाले गए निष्कर्षों पर खरा उतरते हैं? ऐसा लगता है कि मैनली की किताब यह दिखाने का अच्छा काम करती है कि सामग्री वास्तव में उन दावों और उन निष्कर्षों का समर्थन नहीं करती है। अब, इसमें विस्तार से जाने में बहुत अधिक समय लगेगा, लेकिन मैं चाहता हूं कि स्नातक छात्र मैनली की *द बुक ऑफ द लॉ पढ़ें* और इसमें शामिल सामग्री की प्रकृति को देखें।

लेकिन हमारे उद्देश्यों के लिए, मुझे लगता है कि जिस चीज़ पर हम ध्यान देना चाहते हैं वह यह है कि योशिय्याह के समय में मंदिर में पाए गए कानून की किताब के साथ ड्यूटेरोनोमिक कोड की पहचान और फिर यह कहना कि पूजा के केंद्रीकरण की मांग 7वीं में कुछ नई थी। शताब्दी ईसा

पूर्व, यह ड्यूटेरोनोमिक कोड की विशेषता थी। केंद्रीकरण का वह विचार इसी समय स्थापित किया गया था, यह ड्यूटेरोनॉमी की पुस्तक में लिखा गया था, जिसकी उत्पत्ति उस समय हुई थी, क्योंकि यह पूजा के केंद्रीकरण की मांग करता था, जबकि अन्य संहिताएं ऐसा नहीं करती थीं। वह केंद्रीकरण संपूर्ण वेलहाउज़ेन परिकल्पना की आधारशिला है। वेल्ह ऑसेन ने स्वयं वेलहौसेन के दर्शन कथन, पृष्ठ 368 में इसे स्वीकार किया है: “क्योंकि मैं मुख्य रूप से इसमें ग्राफ से भिन्न हूं; कि मैं हमेशा संस्कृति के केंद्रीकरण की ओर लौटता हूं और उससे विशेष विचलन का निष्कर्ष निकालता हूं। मेरी पूरी स्थिति मेरे पहले अध्याय में समाहित है; वहां मैंने वह सब स्पष्ट रूप से रखा है जो इज़राइल के इतिहास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अर्थात्, पूजा के महान कायापलट में भविष्यवक्ता अधिकारियों द्वारा ली गई भूमिका जो किसी भी तरह से अपने आप नहीं हुई। "मेरी पूरी स्थिति," वे कहते हैं, "मेरे पहले अध्याय में निहित है, और मैं हमेशा पंथ के केंद्रीकरण पर वापस जाता हूं।"

पहले अध्याय में, पृष्ठ 17 पर और उसके बाद, अपनी पुस्तक के पहले पैराग्राफ में, वह कहते हैं, “इज़राइल के अभयारण्य की एकता को मूल रूप से मान्यता नहीं दी गई थी। समय के साथ मंदिर के निर्माण से पहले की सभी चीजों में धीमी गति से वृद्धि हुई, जहां विशेष वैधता वाले किसी भी अभयारण्य का कोई निशान नहीं पाया जा सकता है। पवित्रस्थान के सभी भाग इब्रानियों द्वारा कनानियों से छीनी गई विरासत का हिस्सा थे।” तो यह विचार यह है कि व्यवस्थाविवरण में पूजा का केंद्रीकरण आवश्यक है। तथ्य यह है कि 621 ईसा पूर्व वेलहाउज़ेन के सिद्धांत के लिए एक निश्चित बिंदु बन जाता है, और यह एक महत्वपूर्ण बिंदु बन जाता है। लेकिन हम जो प्रश्न पूछना चाहते हैं वह यह है: क्या पूजा का केंद्रीकरण व्यवस्थाविवरण अध्याय 12 का मुख्य बिंदु है? और यदि हां, तो किस हद तक? और इसका इस पूरे सिद्धांत से क्या संबंध है? क्या वास्तव में इन सभी कोडों के बीच कोई प्रगति हुई है? जब हम अगले घंटे में इस बिंदु पर इसे उठाएंगे तो हम इस पर गहन चर्चा करेंगे।

**दूसरे घंटे की**

**समीक्षा**

आखिरी घंटे के अंत में हम उस बिंदु पर पहुंच गए थे जहां मैंने आपको व्यवस्थाविवरण की तारीख और जोशिया के समय में पाए गए कानून के साथ व्यवस्थाविवरण की पहचान के महत्व का एक सामान्य विचार देने की कोशिश की थी, जो जेईडीपी साहित्यिक के लिए है- वेलहाउज़ेन द्वारा प्रतिपादित पेंटाटेच के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण। मैंने प्रदर्शित किया कि व्यवस्थाविवरण को योशिय्याह के समय से लिया गया मानना उस पूरे सिद्धांत के लिए कितना महत्वपूर्ण है। समय के अंत में मैंने उल्लेख किया कि वेलहाउज़ेन ने स्वयं स्वीकार किया है कि उनकी थीसिस इसी मुद्दे पर केंद्रित है। वह स्वयं योशिय्याह के साथ व्यवस्थाविवरण और पूजा के केंद्रीकरण के सिद्धांत का संबंध बनाता है, जिसके बारे में उसे लगता है कि व्यवस्थाविवरण में इसकी जोरदार वकालत की गई है। उनका मानना है कि पूजा का केंद्रीकरण योशिय्याह के समय में शुरू हुआ।

जे. जेईडीपी सिद्धांत के लिए व्यवस्थाविवरण का महत्व अब, मैं उस बिंदु को उठाना चाहता हूं और फिर आपको कुछ अन्य संक्षिप्त उद्धरण देना चाहता हूं जो समग्र रूप से जेईडीपी सिद्धांत के लिए व्यवस्थाविवरण के महत्वपूर्ण महत्व पर जोर देते हैं। यदि आप इससे परिचित नहीं हैं तो यह पुस्तक जानने के लिए एक अच्छी पुस्तक है। इसे *द ओल्ड टेस्टामेंट एंड मॉडर्न स्टडीज कहा जाता है*, जिसका संपादन एचएच राउली ने किया है। *पुराने नियम और आधुनिक अध्ययन में* निबंधों का एक संग्रह शामिल है जो पुराने नियम के अध्ययन के सभी विभिन्न विषयों में पुराने नियम के अध्ययन का सर्वेक्षण करता है, और इस शताब्दी में अपनाए गए दृष्टिकोणों का सारांश देता है। उदाहरण के लिए, आपके पास डब्ल्यूएफ अलब्राइट द्वारा लिखित लेख "फिलिस्तीन का पुराना नियम पुरातत्व"; प्रोफेसर नॉर्थ द्वारा लिखित "पेंटाट्यूचल आलोचना"; स्निप द्वारा "ऐतिहासिक पुस्तकें"; ईस्फेल्ट द्वारा "भविष्यवाणी साहित्य"; एआर जॉनसन द्वारा "भजन" इत्यादि। मैं यह सब नहीं झेलूंगा। लेकिन यह जो करता है वह पुराने नियम के अध्ययन के उन सभी विभिन्न क्षेत्रों को लेता है और आपको एक सारांश लेख देता है जो 1950 के दशक तक के शोध का सारांश प्रस्तुत करता है। यह निबंधों का एक अच्छा संग्रह है, जो आपको पिछली पीढ़ी में पुराने नियम के अध्ययनों का एक परिप्रेक्ष्य देने का प्रयास करता है।

जीडब्ल्यू एंडरसन द्वारा लिखे गए इन लेखों में से एक, पृष्ठ 283 में, लेख हिब्रू धर्म पर है। वह वेलहाउज़ेन की स्थिति, इसके महत्व और इसके आसपास की बहस के बारे में बात करते हैं, और फिर वह कहते हैं, "किसी भी बिंदु पर कालक्रम की वेलहाउज़ेन प्रणाली की आधारशिला, ड्यूटेरोनॉमी की तारीख और प्रकृति से अधिक तीव्र संघर्ष नहीं हुआ है।" ड्यूटेरोनॉमी कालक्रम की वेलहाउज़ेन प्रणाली का "कीस्टोन" है। उनका कहना है कि व्यवस्थाविवरण की उस काल-निर्धारण के संबंध में बहस तीखी रही है। और फिर वह कहते हैं, "अगर यहां गंभीर अनिश्चितता है, तो सिद्धांत की पूरी संरचना कमजोर हो जाती है।" इसलिए, दूसरे शब्दों में, यदि आप जीडब्ल्यू एंडरसन, जो काफी हद तक वेलहाउज़ेन का अनुसरण करते हैं, के अनुसार वेलहाउज़ेन द्वारा उस 621 ईसा पूर्व की तारीख में ड्यूटेरोनॉमी को रखने पर गंभीरता से सवाल उठाते हैं, यदि आप इसे खत्म कर सकते हैं, तो आप इसे सिद्धांत की आधारशिला पर मार सकते हैं। यदि आप व्यवस्थाविवरण की उस तिथि को समाप्त कर सकते हैं, तो आप वास्तव में पूरी संरचना को गंभीरता से कमजोर कर देंगे। "अगर यहां गंभीर अनिश्चितता है, तो सिद्धांत की पूरी संरचना कमजोर हो जाती है।" इसलिए व्यवस्थाविवरण साहित्यिक आलोचनात्मक चर्चाओं में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखता है । एचएच राउली ने स्वयं, एक छोटी सी किताब लिखी है जो जेईडीपी स्थिति का सारांश है जिसे *द कहा जाता है पुराने नियम का विकास* . यह एक तरह से बुनियादी वेलहाउज़ेन स्रोत की महत्वपूर्ण स्थिति का परिचय है। पृष्ठ 29 पर वे कहते हैं, "इसलिए, ड्यूटेरोनॉमी की संहिता पेंटाट्यूचल आलोचना में महत्वपूर्ण महत्व रखती है क्योंकि मुख्य रूप से इसके संबंध में ही अन्य दस्तावेज़ दिनांकित होते हैं।" दूसरे शब्दों में, वह एक निश्चित बिंदु है, 621 ईसा पूर्व और योशिय्याह का समय, व्यवस्थाविवरण की तारीख के आधार पर अन्य कोडों की सापेक्ष तिथियों के साथ। “इसके अलावा, उस कोड को किसी भी अन्य की तुलना में अधिक संभावना के साथ अधिक सटीक रूप से दिनांकित किया जा सकता है। लेकिन इसका कारण, निश्चित रूप से, यह उच्चतम स्तर तक संभव है कि योशिय्याह के सुधार के आधार के रूप में कानून की किताब व्यवस्थाविवरण की किताब थी और यह किताब पहली बार उस समय सार्वजनिक रूप से ज्ञात हुई थी। इसलिए वह डेटिंग ड्यूटेरोनॉमी के महत्व की बात करता है और इसे योशिय्याह की कानून की किताब से जोड़ता है।

मानक आलोचनात्मक परिचय डॉ. ओटो ईसफेल्ट का, *द ओल्ड टेस्टामेंट: एन इंट्रोडक्शन है*। यदि आप वेलहाउज़ेन परंपरा में पुराने नियम का सबसे विस्तृत परिचय चाहते हैं तो यही होगा। यह 1965 में हाल के जर्मन संस्करण का अंग्रेजी अनुवाद है। पृष्ठ 171 पर वह योशिय्याह की कानून की किताब के साथ व्यवस्थाविवरण की पहचान के बारे में बात करता है, जो इसे 621 ईसा पूर्व में बताता है, और फिर वह कहता है, "इतिहास के इस भाग से व्यवस्थाविवरण का एक बड़ा खंड मिलता है। स्थापित किया गया है, और एक निश्चित बिंदु की खोज की गई है जिसके द्वारा पेंटाटेच के अन्य घटक भागों की आयु भी निर्धारित की जा सकती है। इस प्रकार डेवेट की थीसिस ने पेंटाटेचल आलोचना को 'आर्किमिडीज़ का एक बिंदु' प्रदान किया, जिससे वह खुद को चर्च और आराधनालय परंपरा के बंधन से मुक्त करने के लिए खुद को जोड़ सके, और इसके स्थान पर पेंटाटेच की एक वैकल्पिक डेटिंग को अपने दिल में रख सके। मुझे उस पर आगे चर्चा करने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन वह निश्चित बिंदु को 'आर्कमीडियन बिंदु' के रूप में बोलते हैं, यानी पूरी संरचना के बारे में।

इसलिए विशेष रूप से पेंटाटेच के लिए आलोचनात्मक दृष्टिकोण में व्यवस्थाविवरण की तारीखें बहुत महत्वपूर्ण हैं, लेकिन इसका पुराने नियम के अन्य हिस्सों पर भी प्रभाव पड़ता है। आर्किमिडीज़ एक यूनानी गणितज्ञ थे, और आर्कमेडियन बिंदु वह बिंदु है जिसके द्वारा अन्य चीजें निर्धारित की जाती हैं। दूसरे शब्दों में, यह एक निश्चित आरंभ या स्थायी बिंदु की तरह है, जहाँ से कोई व्यक्ति दुनिया को स्थानांतरित कर सकता है। यदि आप यह निर्धारित कर सकते हैं तो आप बाकी सब कुछ निर्धारित कर सकते हैं। अब, मुझे लगता है कि जो बात मैं उससे कहना चाहूँगा वह यह है: तो फिर, यह निश्चित रूप से है कि व्यवस्थाविवरण की तारीख का पूरा प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण है, लेकिन यह किसी भी तरह से तय और सहमत नहीं है मामला। विशेष रूप से, व्यवस्थाविवरण की तारीख के संबंध में एक हालिया चर्चा में आज यही मामला है। पूरा विषय काफी उतार-चढ़ाव में है, और यदि आप 20 साल पहले एंडरसन के बयान को लें - कि अगर व्यवस्थाविवरण के बारे में गंभीर प्रश्न हैं - तो यह पूरी संरचना गंभीर खतरे में है। निश्चित रूप से, यह बहुत महत्वपूर्ण बात है।

एल. जेईडीपी सिद्धांत की चुनौतियां मैं यहां एक रूपरेखा के साथ काम कर रहा हूं। हमने कल रोमन अंक I के साथ शुरुआत की। "लेखकत्व और तिथि: महत्वपूर्ण दृष्टिकोणों का एक सर्वेक्षण।" एक राजधानी।" था, "वेलहौसेन स्कूल का सिद्धांत", जिसे मैंने आप तक पहुंचाने की कोशिश की थी और हम अभी-अभी निष्कर्ष पर पहुंचे हैं। पूंजी "बी." है, "विभिन्न दिशाओं से क्लासिक वेलहाउज़ेन स्थिति के लिए चुनौतियाँ।" 1. उसके अंतर्गत, "निर्वासन के बाद की अवधि के समर्थक।"

अब, वेलहाउज़ेन सिद्धांत को चुनौती विभिन्न दिशाओं से है। वेलहाउज़ेन स्थिति की वकालत के बाद से व्यवस्थाविवरण की तिथि कभी भी एक सुलझा हुआ प्रश्न नहीं रहा है। इस पर हमेशा बहस होती रही है. कुछ लोग इसे बाद में आगे बढ़ाना चाहते हैं और कुछ लोग इसे पहले आगे बढ़ाना चाहते हैं। कुछ लोगों ने कहा है कि आपको इसे वैसा ही लेना चाहिए जैसा यह दावा करता है, मोज़ेक। सभी प्रकार के पद स्थापित किये गये हैं। मैं समय नहीं लेना चाहता, और मुझे नहीं लगता कि यह इसके लिए सही जगह है, क्योंकि हम किताब में ही घुसना चाहते हैं। इन सभी सिद्धांतों के बारे में विस्तार से जाना, यह अपने आप में एक अध्ययन है।

यदि आप पढ़ते *हैं ओल्ड टेस्टामेंट एंड मॉडर्न स्टडी*, "पेंटाट्यूचल क्रिटिसिज्म" पर लेख, आपको उस लेख में चर्चा का कुछ हद तक सर्वेक्षण मिलेगा। यह अध्याय 3 है, "पेंटाट्यूचल आलोचना।" आपको थॉम्पसन की परिचयात्मक सामग्री में इन महत्वपूर्ण स्थितियों का कुछ सर्वेक्षण भी मिलेगा। क्रैगी की परिचयात्मक सामग्री की तुलना में थॉम्पसन की परिचयात्मक सामग्री में यह अधिक है। यदि आप इंजील परिप्रेक्ष्य से व्यवस्थाविवरण पर आलोचना के पदों का एक अच्छा सर्वेक्षण चाहते हैं, तो ईजे यंग का परिचय देखें : *पुराने नियम का परिचय।* आरके हैरिसन अधिक नवीनतम और अधिक विस्तृत है , यानी आरके हैरिसन का *पुराने नियम का परिचय*। यह विभिन्न प्रकार की महत्वपूर्ण स्थितियों का अच्छा सर्वेक्षण देता है। मैं बस आपको कुछ व्यापक पंक्तियाँ, कुछ नाम, शायद दिशाओं के बारे में कुछ विचार देना चाहता हूँ और इससे अधिक नहीं।

लेकिन सबसे पहले, निर्वासन के बाद की तारीख के समर्थक हैं। यहां पहला व्यक्ति आरएच केनेट है। उन्होंने *ड्यूटेरोनॉमी और डिकालॉग नामक* पुस्तक लिखी । उन्होंने हाग्गै या जकर्याह के निर्वासन के बाद के समय में व्यवस्थाविवरण के लिए एक तारीख प्रस्तावित की। दूसरे शब्दों में

निर्वासन के बाद की तारीख लगभग 520 ईसा पूर्व या उस सामान्य क्षेत्र में। मुझे नहीं लगता कि उनके इतने तर्क-वितर्क का कोई मतलब होगा। [यहाँ टेप काटा गया]

डॉन सियान्सी और टेड हिल्डेब्रांट द्वारा लिखित
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित
डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा अंतिम संपादन
डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा पुनः सुनाया गया